

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 9th



aglasem.com

Class : 9th

Subject : इतिहास

Chapter : 4

Chapter Name: वन्य समाज और उपनिवेशवाद

Q1 औपनिवेशिक काल की वन प्रबंधन में आए परिवर्तनों ने इन समूहों को कैसे प्रभावित किया?

Answer.

1. झूम खेती करने वालों को- अंग्रेजों को झूम खेती जंगलों के लिए नुकसानदायक लगती थी। सरकार ने इस पर रोक लगा दी थी, जिसके चलते वहां की समुदायों को जंगलों में उनके घर से जबरदस्ती विस्थापित किया गया। कुछ ने अपना पेशा बदला तो कुछ लोगों ने विद्रोह का सहारा लिया।
2. घुमंतू व चरवाहा समुदायों को- जब सरकार ने जंगलों में जानवरों को चराने से रोक लगा दी, तब लोग चोरी-छिपे जानवर चलाने लगे। वे अब जंगल की पुलिस व चौकीदारों की दया पर निर्भर होते थे। अफसर उनसे घूस लेने लगे और उन्हें परेशान करते थे।
3. लकड़ी व वन उत्पादों का व्यापार करने वाली कंपनियों को - व्यापार में लिप्त कंपनियों को इस वन प्रबंधन से लाभ मिला। वे जंगलों में नकदी फसलें उगाने लगे। ब्रिटिश सरकार ने कई यूरोपीय कंपनियों को कुछ इलाकों में वन उत्पादों के व्यापार का एकाधिकार दे दिया।
4. बागान मालिकों को - जंगलों में जीवन जीने वाले लोग अब बागानों में काम करने को मजबूर हो गए। मालिक उन्हें घर पर नहीं जाने देते थे व काफी लंबे समय तक काम करवाते और बेहद कम वेतन देते थे।
5. शिकार खेलने वाले राजाओं वह अंग्रेज अफसरों को - अंग्रेजों से पहले मुगल काल तक जिस शिकार परंपरा को संस्कृति का एक हिस्सा माना जाता था, अंग्रेजों ने उसे एक खेल बना दिया। अंग्रेज अंधाधुंध जानवरों को मारते और कहते कि ऐसा करके वे हिंदुस्तान को सभ्य बनाएंगे। जॉर्ज यूले नामक अफसर ने तो करीब 400 बाघों की हत्या की थी। सरकार ने जंगल के कुछ इलाके शिकार के लिए आरक्षित कर दिए थे।

Page : 96 , Block name : प्रश्न (long answer question)

Q2 बस्तर और जावा के औपनिवेशिक वन प्रबंधन में क्या समानता है थी?

Answer. बस्तर में अंग्रेजों का राज था वहीं जावा में डचों का राज था। दोनों ही यूरोपीय औपनिवेशिक ताकतें थीं, अतः उनके वन प्रबंधन में भी काफी समानताएं देखने को मिलती हैं।

डच भी अंग्रेजों की तरह रेल लाइन बिछाने व जहाज़ निर्माण के लिए लकड़ी हासिल करना चाहते थे।

जावा में भी वैसी ही वैज्ञानिक वानिकी अपनाई गई जैसी भारत में थी।

जैसे बस्तर में वन प्रबंधन के नाम पर अंग्रेजों ने आदिवासियों के आवागमन पर रोक लगा दी थी वैसे ही जावा में डचों ने वहां के समुदायों के साथ किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बस्तर व जावा दोनों जगहों पर अंग्रेजों ने एक समान रूप से ही वन प्रबंधन करना चाहा। दोनों ही स्थानों पर विद्रोह भी हुए। जहां बस्तर में गुंडा धूर ने बागडोर संभाली, वहीं जावा में यह काम सुरोन्तिको सामिन ने किया।

Page : 96 , Block name : प्रश्न (long answer question)

Q3 सन 1880 से 1920 के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के वनाच्छादित क्षेत्र में 97 लाख हेक्टेयर की गिरावट आई। पहले की 10.86 करोड़ हेक्टेयर से घटकर यह क्षेत्र 9.89 करोड़ हेक्टेयर रह गया था। इस गिरावट में निम्नलिखित कारकों की भूमिका बताएं।

Answer. भारत में 1800 से 1920 तक वनाच्छादित क्षेत्र में गिरावट के कारकों की भूमिका इस प्रकार थी-

रेलवे- 1850 के बाद से ही अंग्रेजों ने भारत में रेल लाइनों को बिछाना शुरू कर दिया था। ऐसा करके वे यूरोप के माल को भारत के अंदरूनी हिस्सों तक पहुंचाना चाहते थे और कच्चे माल को बंदरगाहों तक। परंतु रेल लाइनों के लिए लाखों लकड़ी के स्लीपर्स की जरूरत होती थी, जिसके लिए लाखों पेड़ काटे गए और जंगलों को साफ किया गया।

जहाज़ निर्माण- इंग्लैंड में 19वीं सदी की शुरुआत तक ओक यानी बलूच के जंगल लुप्त हो चुके थे। इसलिए सेना के लिए जहाज़ बनाना मुश्किल हो गया था। तब भारत व अन्य देशों से लकड़ी का अंधाधुंध दोहन शुरू हो गया। जहाज़ निर्माण, व्यापार के साथ-साथ साम्राज्यवादी प्रसार के लिए भी जरूरी था।
कृषि विस्तार- परंपरागत झूम खेती को वन प्रबंधन की आड़ में बंद करवाया गया। खाद्य फसलों की जगह विदेशी नकदी फसलों को उगाने पर जोर दिया गया। खेती को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक जंगलों को साफ किया जाने लगा।

व्यावसायिक खेती- अंग्रेज जंगलों को संरक्षित करना चाहते थे। वे जंगल से उन्हीं पदार्थों की आपूर्ति चाहते थे जो व्यापार में योगदान दे सके, यथा लकड़ी, रबड़ इत्यादि। वैज्ञानिक वानिकी के नाम पर प्राकृतिक वन काटकर एक ही किस्म के पेड़ों को एक ही पंक्ति में उगाया गया।

चाय कॉफी के बागान- यूरोप में चाय कॉफी की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए जंगलों को कब्जे में लेकर उन पर बागान लगाए गए। बागान मालिकों को सस्ते में जमीनें दी गई, जिसके चलते जंगल और तेजी से साफ होने लगे।

आदिवासी और किसान- इन लोगों पर सरकार ने अनेक कानून बनाकर पाबंदियाँ लगा दी थीं। वे अब जंगलों में लकड़ी चुराने लगे, फल और सब्जियाँ अब उन्हें आसानी से नहीं मिल पाती थीं।

अतः उपरोक्त कारणों के चलते वनाच्छादित क्षेत्र में भारी गिरावट देखने को मिली।

Page : 96 , Block name : प्रश्न (long answer question)

Q4 युद्ध से जंगल क्यों प्रभावित होते हैं?

Answer. कोई भी युद्ध पर्यावरण के लिए भी उतना ही हानिकारक होता है जितना समाज व अर्थव्यवस्था के लिए। युद्ध न केवल प्रत्यक्ष अपितु अप्रत्यक्ष रूप से भी जंगलों को प्रभावित करते हैं। जंगल प्राकृतिक साधनों से परिपूर्ण होते हैं। वे रोटी, कपड़ा, मकान तीनों आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं। युद्ध इसी प्राकृतिक सौंदर्य को बंजर ज़मीन में तब्दील कर देते हैं। प्रथम विश्व युद्ध में भले ही भारत और इंडोनेशिया सीधे तौर पर शामिल नहीं थे पर औपनिवेशिक ताकतों ने अपनी साम्राज्यवादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हमारे ही वनों का दोहन किया। उस समय रेलगाड़ियों व जहाज़ों के चलने के लिए लकड़ियों का उपयोग आवश्यक था। इसकी आपूर्ति भारत व अन्य उपनिवेशों में लाखों वृक्ष काटकर पूरी की गई।

जब जापानी सेना जावा पर कब्ज़ा करने वाली थी, तब डचों ने 'भस्म करो और भागो' की नीति अपनाई, जिसके चलते विशाल लट्ठों के ढेर में आग लगा दी गई ताकि वे जापानियों के हाथ ना लगे।

आधुनिक युग में 'पर्यावरण आतंकवाद' की संज्ञा आम हो चली है। अतः युद्ध से दूर और वृक्ष के पास रहना आज के समय की ज़रूरत है।

Page : 96 , Block name : प्रश्न (long answer question)